



श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष- अभ्यास - ६

नवम्बर-२०१९

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोड़ना नहीं है, जोड़ने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरूरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नहीं जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगे, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरूरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो -

२०

- अनाज पीसने के पश्चात भी आटा कितनेक दिन रहता है ।
- की दृष्टि से सर्व तत्व समझ गया ।
- बाहर से तिरछा चले और अंदर से व्यवहार करें ।
- हजार योजन मूल में विस्तार और ऊँचाई रखने वाले कूटों को कहते हैं ।
- इन्द्रो धनपतिओ, नरपतिओं ने प्रणाम से तथा पुष्पों से बहुतबार पूजा है जिन्हें ऐसे को मैं प्रणाम करता हूँ ।
- गुरु से अवग्रह क्षेत्र से बाहर रहकर देशना सुनना ।
- तर्यावाय का प्रकृति में समावेश होता है ।
- व्यापक विगुण ऐसी आत्मा को कर्म का है ही नहीं ।
- ये बहुसंख्य शिखर हैं ।
- इस विभाषा में दो शब्द हैं ।
- तामसिक आहार लेने से मानसिक विणर और में वृद्धि होती है ।
- एक को हर्ष के आवेश में गुरुवन्दन की भावना से केवलज्ञान की प्राप्ति हुई ।
- आचार्य आदि को आता देख कर मस्तक से प्रणाम करना ।
- श्रावक ने प्रथम उत्कृष्ट से तो प्रासक शुद्ध आहार लेना चाहिये ।
- स्थिर नाम कर्म, आदेयनाम कर्म का समावेश में है ।
- त्रिकरण योग से शांतिनाथ भ. के शरण में जाता हूँ ।
- श्री मंडित स्वामी सर्वश्रेष्ठ संघयण वाला शरीर पाये थे ।
- मैं कारण बिना करूंगा नहीं ।
- गुण रहित वीतराग केवलज्ञानी केवलदर्शनी ऐसा जो आत्मा ज्ञान से सर्व व्यापक है ।
- श्री कृष्ण महाराजा ने को वंदन करके तीर्थकर गोत्र बांधा ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो -

१५

- प्रदेशों की अपेक्षा से भोग लिया जाये जबकि काल की अपेक्षा से कम होता है, वह कौनसा आयुष्य कर्म कहलाता है ।
- वेद पदों में देवों को कैसे बताये गये हैं ?
- वर्तमान में द्वादशावर्त वंदन किसे करने का व्यवहार है ?
- हिमवंत और शिखरी कौन से पर्वत हैं ?
- तपस्या से तत्काल उगे शरद ऋतु के सूर्य से अधिक कांति किसकी है ।
- पका हुआ आम मुँह में रखकर चूसने से कौनसा अतिचार लगता है ।
- विहायो गति नाम कर्म कौनसी प्रकृति में आता है ?
- कस रत्नकुक्षी माता के दोनों पुत्र गणधर थे ?
- फागुन चौमासे के पश्चात श्रावक को किसका त्याग करना चाहिये ?
- त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक का समावेश किसमें होता है ?
- लिये हुये नियमों के सुन्दर पालन के लिये हमें कौन सहायता करता है ?
- सभी शिखरों में आखरी शिखर क्या कहलाता है ?
- अंतर के भाव बिना किये गये वंदन कौन से वंदन है ?
- वीर प्रभु के सातवें गणधर का कौनसा संस्थान था ?
- किस गति में दुःख है फिर भी जीने की इच्छा है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो -

१०

- १) फास २) प्पक्तयं ३) सगसडि ४) विज्जुपह ५) अभ्युथानं ६) मिच्चाई ७) विचरण ८) अणहं
- ९) निरया १०) पत्तेआ ११) सुरगिरी १२) उरग १३) उवणमे १४) नीआ १५) चउक्क १६) संठाण
- १७) इक्कारस १८) तवसा १९) सय २०) सुहुम

प्रश्न नं. ४ जोड़ियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) -

१०

A	B		
१) श्री शांतिनाथ	१) रोहिणी नक्षत्र	६) सुभग	६) मंडित
२) आताप	२) आकाश	७) उला	७) महामुनि
३) पर्वतिथि	३) आदेय	८) धनदेव	८) आयुष्य कर्म
४) मौर्यपुत्र	४) नियम	९) चारणमुनि	९) गंधमादन
५) सौमनस	५) उद्योत	१०) उपानह	१०) दुःपक्वौषधि

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो -

१. आनुपूर्वी नामकर्म के भेद कितने ?
२. पर्वतों के अधिष्ठायक देव-देवीओं के आवास कितने ?
३. श्री मंडित गणधर ने कितने वर्ष की आयु में चार घनघांती कर्मों का नाश किया ?
४. भोगोपभोग व्रत में भोजन प्रकार के कितने नियम हैं ?
५. नाम कर्म की कुल प्रकृति में से कितनी प्रकृति कम करें तो सड़सठ प्रकृति होती हैं ?
६. महाविदेह क्षेत्र में कितने वक्षस्कार पर्वत आये हुए हैं ?
७. व्यसन, अभक्ष्य, अनंतकाय संबंधी कितने नियम अभ्यासक्रम में दिये हैं ?
८. शरीर बांधते समय कितनी प्रकृति के साथ बांधते हैं ?
९. अजित शांति स्तोत्र की २० वीं गाथा में कितने भवनपति देवताओं के नाम आते हैं ?
१०. वीर प्रभु के सातवे गणधर कितने वर्ष की उम्र में राजगृही पधारे ?

१०

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ -

१. शाश्वत प्रतिमाजी के विविध अंग विविध रत्नों के बने होते हैं ।
२. फेटा वंदन केवल गुरु भगवती को ही किया जाता है ।
३. स्वयं के शरीर की स्वाभाविक कांति सी जो दीपते हैं वे देव ।
४. पानी को एक उकाला आए याने पानी अचित्त हो जाए ।
५. उपांग नाम कर्म के तीन भेद हैं ।
६. मा नक्षत्र में श्री मौर्यपुत्र गणधर का जन्म हुआ था ।
७. भानजे मुनि श्री शीतलाचार्य को वंदन करने आ रहे थे ।
८. सिद्धायतन को पश्चिम दिशा में भी द्वार होता है ।
९. मांस, मदिरा, लहसुन, कांदे, तामसिक आहार कहलाते हैं ।
१०. श्री मौर्यपुत्र गणधर उम्र में स्वयं के गुरु सी बड़े थे ।

१०

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो -

१. अगर यह मौका साथ लेंगे तो ही आत्मकल्याण साथ सकेगें अन्यथा जीवन हार जायेंगे ।
२. अंर के बहुमान से विधिपूर्वक वंदन करना वह भाव वंदन है ।
३. विराधना से अटकें तो शुभ - शुद्ध भाव में रमने सद्गति का आयुष्य बंधता है ।
४. शंकाओं का समाधान करने का सुनहरा मौका मिला है ।
५. आम्रादिक के म्होर और सूक्ष्म केरी जैसी असार वस्तु कि जिसके खाने से तृप्ति भी न हो और भूख भी मिटे नहीं ।
६. असुर गरुल परिवंदिअं, किन्नरोग गमंसियं, देवकोडी सय संधुअं समणसंघ परिवंदिअं ।
७. ये वेद पद कर्म से सदा के लिये, मुक्त हुए ऐसी मुक्तात्माओं का स्वरूप बताते हैं ।
८. उसी रस्सी को गुच्छा बना कर भट्टी में डालने में आये तो वह अल्प समय में ही जल जाये ।
९. मैं पाँच तिथि, पर्युषण पर्व, आयंबिल की ओली वगैरह पर्व के दरमियान संपूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करुंगा ।
१०. गुरु की आशातना करने से आत्मा अनंत संसार में अनंत काल तक परिभ्रमण करती है ।

१०

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ -

१. आयुष्य कर्म
२. गुरुवंदन से लाभ और गुरु का बहुमान करना तथा आशातनायें टालना ।
३. भोगोपभोग व्रत क्या है उसका एक अतिचार समझाओ ।
४. मौर्यपुत्र की शंका और प्रभु का समाधान समझाओ ।
५. सिद्धायन कहाँ है और उसमें क्या है ?

१५

उत्तर पत्र लिखे पते पर भेजिए : सौ. काश्मीरा विनोद लोडाया
शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१
सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.achalgach.com